

## Chapter 15

Question: What is a giant? Why are we afraid of it?

Krishnamurti: You know, fairy tales are good to read because they contain a lot of things very instructive. As there is always a reward, a boon, you ask for something, but after asking, you are always punished. You know, there is a fairy, a good angel or the good judge or the good something from whom you ask something, in all fairy stories. It gives you something, but there is always a snag behind it. Similarly, in fairy tales, there is a giant.

Question: When we are on the stage and acting, why is it that we cannot act freely?

Krishnamurti: Do you act freely and easily all the time? When you are with older people, with people who are criticizing you; with people who are watching, do you act freely? No. We are shy, are we not? We put on airs. We become self-conscious. On the stage, you are confronted with a lot of people, and you are shy.

Acting is all right while you are young and are playing with all this. But most of us, as we grow older, begin to act; in our daily life we are posing. We think we are somebody and must live up to that part, and so we are always putting on a mask. Have you not noticed it? You think you are a great saint, a great idealist, and you put on that mask, which is a pose. It is really one of our great misfortunes that we are

प्रश्न : राक्षस क्या होता है? हमें इससे डर क्यों लगता है?

कृष्णमूर्ति : आप जानते हैं न, कि परियों की, जादूगरों आदि की जो कहानियां बच्चों की किताबों में होती हैं उनमें बहुत सी शिक्षाप्रद बातें होती हैं। क्योंकि उन कहानियों में सदैव किसी इनाम, वरदान आदि का उल्लेख होता है, आप कुछ मांगते हैं, परंतु उस मांग के साथ हमेशा सज़ा भी जुड़ी होती है। आप जानते होंगे कि उन कहानियों में कोई परी, कोई फरिश्ता या कोई अच्छा व्यक्ति या कोई ऐसी अच्छी चीज़ होती है जिससे आप कुछ मांग सकते हैं--सभी कहानियों में ऐसा कुछ-न-कुछ हुआ करता है। उससे आपको कोई चीज़ मिल तो सकती है परंतु उस चीज़ को पाने की राह में कोई अड़चन या मुश्किल भी अवश्य हुआ करती है। इसी प्रकार इन परियों की कहानियों में राक्षस भी हुआ करता है।

प्रश्न : जब हम मंच पर जाकर अभिनय करते हैं, तो हम मुक्त भाव से अभिनय क्यों नहीं कर पाते?

कृष्णमूर्ति : क्या अन्य अवसरों पर आप मुक्त भाव से व्यवहार कर पाते हैं? जब आप बड़े लोगों के बीच होते हैं, उन लोगों के बीच होते हैं जो आपकी आलोचना करते हों, या जो आपके व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखते हों--क्या उस समय आप मुक्त होकर, निश्चिंत होकर व्यवहार कर पाते हैं? नहीं कर पाते हैं। हम शरमाते हैं, हैं कि नहीं? या हम इतराते हैं। या हमें संकोच होने लगता है। इसी तरह जब आप मंच पर होते हैं तो आपके सामने बहुत से दर्शक होते हैं और आप शरमा जाते हैं।

जब आप छोटे होते हैं उस समय अभिनय करना और इस सबके साथ खेलना बिलकुल स्वाभाविक है। किंतु हममें से ज़्यादातर लोग तो बड़े हो जाने पर अभिनय करने लगते हैं, अपने रोज़ के जीवन में हम नाटक करते हैं। हमें लगता है कि हम कोई हैं और हमें उस विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करना होगा, और इसलिए हम सदैव एक मुखौटा लगाकर रखते हैं। क्या आपने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया? आप सोचते हैं कि आप एक महान संत हैं, एक महान आदर्शवादी हैं और उस तरह का मुखौटा आप पहन लेते हैं, जो कि एक नाटक होता है।

## Chapter 15

always taught to become something. The 'becoming something' is posing, pretending. But if you do not become anything, if you are really simple just as you are, there is no posing, there is no pretending, you are just what you are, and from there, you can go really far.

Question: Why do the birds fly away when they see us?

Krishnamurti: Why do you run away when you see a big cow or when you meet a stranger? It is the same thing.

Question: What is conflict, and how does it arise in our mind?

Krishnamurti: You want to be the captain of a cricket team, but there is somebody else better than you. You do not like that. So, you have a conflict, have you not? You want to get something and you cannot, and so there is conflict. If you can get what you want, then the difficulty is to keep it, so you struggle again, or you want more of it. So, there is always a conflict going on because you are always wanting something. If you are a clerk, you want to become a manager; if you have a cycle, you want a motorcar, and so on and on. If you are miserable, you want to be happy.

So, what you want is not important, but what you are is important. The understanding of what you are, going into it, seeing all the implications of what you are—that frees you from conflict.

Question: What is interest?

Krishnamurti: When you have a

हमारा यह बड़ा दुर्भाग्य है कि हमें सदा कुछ-न-कुछ बनने की शिक्षा दी जाती है। 'कुछ बनना' नाटक है, पाखंड है। परंतु यदि आप कुछ बनें न, यदि आप जो हैं उसी वास्तविकता में सरलतापूर्वक रहें और नाटक न करें, पाखंड न करें, आप जो हैं वही रहें, तो वहां से आप सचमुच बहुत आगे जा सकते हैं।

प्रश्न : जब हम चिड़ियों के पास जाते हैं तो वे उड़ क्यों जाती हैं?

कृष्णमूर्ति : जब आप किसी बड़ी गाय को या किसी अनजाने व्यक्ति को देखते हैं तो आप भाग क्यों जाते हैं? यह वैसी ही बात है।

प्रश्न : द्वंद्व क्या होता है, और हमारे मन में यह कैसे उत्पन्न होता है?

कृष्णमूर्ति : आप अपनी क्रिकेट टीम के कैप्टन होना चाहते हैं परंतु एक अन्य लड़का आपसे बेहतर है। आपको यह बात स्वीकार नहीं होती। इस कारण आपमें अंतर्द्वंद्व पैदा हो जाता है, होता है कि नहीं? जब आप कुछ पाना चाहते हैं और वह चीज़ आपको नहीं मिलती तो आपमें द्वंद्व उत्पन्न होता है। और यदि आप जिसे चाहते हैं वह चीज़ आपको मिल जाती है तो उसे अपने पास बनाए रखना कठिन होता है और फिर आप संघर्ष करते हैं। अतः द्वंद्व हमेशा जारी रहता है क्योंकि आप हमेशा कुछ-न-कुछ पाना चाहते हैं। यदि आप क्लर्क हैं तो मैनेजर बनना चाहते हैं, यदि आपके पास साइकिल है तो आप मोटरसाइकिल पाना चाहते हैं, और यह क्रम जारी रहता है। यदि आप कष्ट में हैं तो आप प्रसन्न रहना चाहते हैं।

इसलिए महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप क्या चाहते हैं, महत्त्वपूर्ण यह है कि आप क्या हैं। आप जो हैं उसे समझना, उस बारे में अन्वेषण करना, आप जो हैं उसके समस्त निहितार्थों को देख लेना—यही आपको द्वंद्व से मुक्त करता है।

प्रश्न : रुचि क्या होती है?

कृष्णमूर्ति : जब आपके पास कोई खिलौना होता है

## Chapter 15

toy, you are very interested in the working of that toy, are you not? Your whole mind is there, you do not think about anything else. When you are interested in something, in a toy, in a play, in a dance, in an idea, you are completely absorbed in that. That is interest.

Most of us have very little interest in life; as we grow older, we are not interested in anything really. So, we have trouble in preventing the mind from wandering away. So, we learn discipline, control, concentration. In a school of this kind, what we should find out—each one of us, the teachers and the students—is what we are interested in, the thing which we love, and that creates no conflict in life afterwards. That is our vocation, that is what we want to do. If you are an artist and your parents and society want you to become a clerk, then you are forced to become a clerk, and all the rest of your life you are struggling, struggling. Really, you have never been able to do what you want to do.

Education is a way of helping each student to find out what he wants, which is quite a difficult thing because we want so many things at different times. Education of the right kind can help you to find out, amongst all the various interests, what really gives you interest, that which you love, that which is one of the requisites, one of the necessities of life.

Question: Why do we fear death?

Krishnamurti: You have asked that question, 'Why do we fear death,' but do you know what death is? You see the green leaf; it has lived

तो आपकी सारी रुचि यह जानने में होती है कि वह खिलौना किस प्रकार काम करता है, है न? आपका मन पूरी तरह उसमें लगा होता है, आप किसी दूसरी चीज़ के बारे में नहीं सोचते। जब आपकी रुचि किसी चीज़ में, खिलौने में, खेलने में, नृत्य में, किसी कल्पना में होती है तो आप उसमें ही पूरी तरह रम जाते हैं। इसी को रुचि कहते हैं।

हममें से अधिकांश के जीवन में बहुत कम रुचि होती है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हमारी रुचि हर चीज़ में खत्म होने लगती है। इसलिए हमें अपने मन को इधर-उधर भटकने से रोक पाना कठिन हो जाता है। इसलिए हम अनुशासन, नियंत्रण, एकाग्रता आदि सीखने लगते हैं। इस तरह के स्कूल में हमें, हममें से प्रत्येक को, शिक्षकों और छात्रों को यह पता लगाना चाहिए कि हमारी अभिरुचि किसमें है, किस विषय से हमें प्यार है, और यदि हम यह पता लगा लेते हैं तो आगे चलकर हमें जीवन में अंतर्द्वंद्वों का सामना नहीं करना पड़ेगा। वह हमारी स्वाभाविक जीविका होगी, यह वह होगा जिसे हम करना चाहेंगे। यदि आप एक कलाकार हैं और आपके माता-पिता व समाज आपको एक क्लर्क बनाना चाहते हैं तो आपको क्लर्क बनने के लिए बाध्य किया जाता है, और अपने पूरे जीवनभर आप संघर्षरत ही रहते हैं। वास्तव में, आप जो करना चाहते हैं वह तो आप कभी कर ही नहीं पाए।

प्रत्येक विद्यार्थी की खोजने में मदद करना कि वह क्या करना चाहता है यही शिक्षा का काम है। और यह वस्तुतः बहुत कठिन काम है क्योंकि हम अलग-अलग अवसरों पर बहुत सारी चीज़ें करना चाहते हैं। सही प्रकार की शिक्षा आपको यह जानने में सहायक होगी कि आपकी विविध रुचियों में वह कौन सी खास है जो आपको सचमुच प्रिय है, जिससे आपको लगाव है--जो आपकी ज़िंदगी की ज़रूरत हो, अनिवार्यता हो।

प्रश्न : हम मृत्यु से क्यों डरते हैं?

कृष्णमूर्ति : आपने प्रश्न पूछा है, 'हम मृत्यु से क्यों डरते हैं'। क्या आप जानते हैं कि मृत्यु क्या है? आप एक हरी पत्ती देखते हैं जो पूरी गर्मियों में

## Chapter 15

all the summer, danced in the wind, absorbed the sunlight; the rains have washed it clean; and the winter comes, it withers and dies. The bird on the wing is a beautiful thing and it too withers and dies. You see human bodies being carried to the river to be burned. So, you know what death is. Why are you afraid of it? Because, you are living like the leaf, like the bird—but then a disease or something else happens to you; and you are finished. So you say, 'I want to live, I want to enjoy, I want to have this thing called life to go on in me.' So the fear of death is the fear of coming to an end, is it not?—not playing cricket, not enjoying the sunlight, not seeing the river again, not putting on your old clothes, not reading books, not meeting your friends constantly; all that comes to an end. So, you are frightened of death.

Being frightened of death, knowing that death is inevitable, we try to find out how to go beyond death; we have various theories. But, if we know how to end, there is no fear; if we know how to die each day, then there is no fear. We do not know how to die because we are always gathering, gathering, gathering. We always think in terms of tomorrow—'I am this and I will be that.' We are never complete in a day, we do not live as though there is only one day to be lived. We are always living in the tomorrow or in the yesterday. If somebody told you that you were going to die at the end of the day, what would you do? Would you not live richly for that day? We do not live the rich fullness of a day. We do not worship the day; (hum kal kya honge yahi sochte rehte) we are always thinking of what we will be

जीवित रही, हवा में नाचती रही, सूरज की धूप को इसने अपने अंदर लिया, वर्षा में धुलकर साफ-सुथरी हुई और शीत ऋतु आने पर यह मुरझाई और मर गई। हवा में उड़ रहा एक पक्षी बहुत सुंदर दिखाई देता है और वह भी जीर्ण-शीर्ण हो कर मर जाता है। नदी के किनारे पर जलाए जाने के लिए शवों को ले जाते हुए भी आप देखते हैं। अतः आप जानते हैं कि मृत्यु क्या है। आप इससे क्यों डरते हैं? एक पत्ती की तरह, एक पक्षी की तरह, आप जीवित हैं—किंतु आप बीमार पड़ जाते हैं या आपको कुछ हो जाता है और आप दम तोड़ देते हैं। इसलिए आप कहते हैं, 'मैं जीना चाहता हूँ, मैं सुख भोगना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि जीवन की यह जोत मुझमें निरंतर जलती रहे।' इसलिए मृत्यु का भय, अंत हो जाने का भय है, है न? क्रिकेट न खेल पाना, सूर्य की रोशनी न देख पाना, नदी को पुनः कभी न देख पाना, अपने पुराने कपड़े फिर न पहन पाना, पुस्तकें न पढ़ पाना, मित्रों से फिर न मिल पाना, यह सब समाप्त हो जाता है। इसलिए, आप मृत्यु से डरते हैं।

मृत्यु से भयभीत होने के कारण, और मृत्यु अटल है यह जान लेने पर हम यह पता लगाने की चेष्टा करने लगते हैं कि मृत्यु के पार कैसे जाया जाए। इस बारे में हमारे अनेक सिद्धांत होते हैं। किंतु यदि हम यह जान लें कि किसी चीज़ का अंत कैसे किया जाता है तो भय नहीं होता, यदि हमें यह पता चल जाए कि प्रतिदिन कैसे मरें तो भय नहीं होता। हमें मरना नहीं आता क्योंकि हम सदैव संचय करने में लगे रहते हैं, निरंतर संचय ही संचय करते रहते हैं। हम सदैव कल की भाषा में सोचा करते हैं—'मैं यह हूँ और मैं वह हो जाऊंगा'। हम एक दिन भी पूरी तरह नहीं जी पाते, हम कभी इस तरह से नहीं जीते मानो हमें जीने के लिए बस एक ही दिन मिला हो। हम हमेशा आने वाले कल या बीते कल में जीते रहते हैं। यदि आपसे कोई यह कहे कि दिन के समाप्त होते-होते आपकी मृत्यु हो जाने वाली है, तो आप क्या करेंगे? क्या तब आप उस दिन को अर्थपूर्ण ढंग से नहीं जिएंगे? हम कभी किसी दिन को पूर्णता के साथ नहीं जीते। हम आज की पूजा नहीं करते, हम कल क्या होंगे यही सोचते रहते हैं—उस क्रिकेट के खेल के बारे में सोचते रहते हैं जिसे कल खेला जाना है, उस परीक्षा का विचार

## Chapter 15

tomorrow—the cricket game that we are going to finish tomorrow, the examination that we are going to take in six months, what we are going to do tomorrow, how we are going to enjoy our food, what kind of clothes we are going to buy, and so on—always tomorrow or yesterday, and so we are never living, we are always really dying in the wrong sense.

If we live one day and finish with it and begin another day as if it were something new, fresh, then there is no fear of death. To die each day to all the things that we have acquired, to all knowledge, to all the memories, to all the struggles, not to carry them over to the next day—in that there is beauty; even though there is an ending, there is a renewal.

Question: When we see new things, why do we like having them?

Krishnamurti: New clothes, new toys, new bicycles, new pictures, new books, new pencils—you see something new and you want it. It is the same thing with the young and with the old. We all want to possess, we all want to acquire, and the shops are full of things we want to possess. We are never content with what we have or what we are. If I am stupid, I want to become clever. The man who is becoming clever is really a stupid person. Please think about it and you will see how true it is. Because, a stupid person can never become clever, he will always remain stupid, but if he understands, if he is aware that he is stupid, then that very awareness of his stupidity is the beginning of intelligence. But, we never think in those ways. You say, 'I am stupid, or I am told I am stupid. I must

करते रहते हैं जो छः माह बाद होनी है, कल हमें क्या-क्या करना है, कल का भोजन कितना मजेदार होगा, हम कौन से कपड़े खरीदने वाले हैं आदि बातें सोचते रहते हैं--सदैव आनेवाले कल अथवा बीते कल के बारे में--इसलिए हम कभी जीते ही नहीं हैं, बल्कि सदैव मर ही रहे होते हैं, वह भी गलत अर्थ में।

यदि हम दिन को पूरी तरह से जिएं और उसको उसी दिन समाप्त कर दें तथा अगले दिन की शुरुआत ऐसे करें मानो वह एक नया ताज़ा दिन हो, तो मृत्यु का भय नहीं रहता। उस सारी सामग्री के प्रति जिन्हें हमने इकट्ठा किया है, समस्त ज्ञान के प्रति, सारी स्मृतियों के प्रति, सारे संघर्षों के प्रति, हर दिन मर जाना, उन्हें अगले दिन के लिए न रख छोड़ना--इस सबमें एक सौंदर्य होता है, अंत होने के साथ ही साथ एक नया जीवन होता है।

प्रश्न : जब हम नयी चीज़ें देखते हैं, तो उन्हें पाने की इच्छा क्यों होने लगती है?

कृष्णमूर्ति : नये कपड़े, नये खिलौने, नयी साइकिलें, नये चित्र, नयी किताबें, नयी पेंसिलें--आप किसी नयी चीज़ को देखते हैं और उन्हें चाहने लगते हैं। छोटे हों या बड़े हों यह बात सब में एक जैसी होती है। हम सब चीज़ों को अपने कब्जे में रखना चाहते हैं, हम सब संग्रह करना चाहते हैं और दुकानें ऐसी चीज़ों से भरी हैं जिन्हें हम पा लेना चाहते हैं। जो हमारे पास है या जो हम हैं उससे हमें संतोष नहीं होता। यदि मैं बुद्धिहीन हूं तो मैं बुद्धिमान होना चाहता हूं। जो मनुष्य बुद्धिमान होना चाहता है वह वस्तुतः मूर्ख ही होता है। कृपया इस पर चिंतन करें और आप देखेंगे कि यह बात किस प्रकार सत्य है। क्योंकि एक बुद्धिहीन मनुष्य कभी बुद्धिमान नहीं बन सकता, वह सदैव बुद्धिहीन ही होता है, परंतु यदि वह समझ सके, यदि वह इस बारे में सजग हो सके कि वह बुद्धिहीन है, तो उसमें उत्पन्न होनेवाली यह सजगता ही प्रज्ञा की शुरुआत होती है। किंतु हम कभी उस प्रकार से नहीं सोचा करते। आप कहते हैं, 'मैं बुद्धिहीन हूं या लोग कहते हैं कि मैं बुद्धिहीन हूं। मुझे अपने भाई की तरह या अमुक लड़के की तरह चतुर होना होगा।' अतः आप बुद्धि

## Chapter 15

become clever like my brother or like that boy over there!' So, you start to acquire, to possess. But if you see you are stupid, if you know you are stupid, then you can begin; then that very awareness that you are stupid does something.

If I know I am blind, then I know what to do. I will walk very carefully, I will have a stick, move very quietly, very gently. But if I do not know I am blind, I will go all over the place. We do not acknowledge that we are stupid. I may be a little stupid, but I am trying to become very clever. Wisdom lies in understanding what is.

Question: What is love?

Krishnamurti: You have listened to me for three weeks. I have talked every morning for five days a week, and then you ask me, 'What is love?' I have talked to you of love in different ways—of truth, of the mind, of fears. You ask, 'What is love?' It is very sad, is it not, because you do not know how careless you are when you ask that question. What matters is not what love is but that you do know your own state, what you are. Do you mean to say that by asking another, a man knows what love is? The man who says, 'I want to know what love is,' in order to have it, will never have loved. If you know that you have no love, then love will come to you. But to know it, you must know what you are, you must not try to become something which you are not.

Do think about all these things. Do not spend your days merely studying, reading some books,

को पाने का, बुद्धिमान होने का प्रयत्न करने लगते हैं। परंतु यदि आप यह देख लेते हैं कि आप बुद्धिहीन हैं, यदि आप यह जान लेते हैं कि आप बुद्धिहीन हैं, तो आपमें एक प्रक्रिया शुरू?? होने लगती है--तब आपकी यह सजगता ही कि आप बुद्धिहीन हैं कुछ करने लगती है।

यदि मैं यह जान लेता हूँ कि मैं अंधा हूँ तो मैं यह समझने लगता हूँ कि अब आगे क्या करना है। मैं बहुत सावधानी के साथ चलूँगा, मैं लाठी का सहारा लूँगा, बहुत धीमे-धीमे, धीरे-धीरे चलूँगा। परंतु यदि मुझे यह पता ही न हो कि मैं अंधा हूँ तो मैं इधर-उधर भटकता रहूँगा। हम यह स्वीकार नहीं करते कि हम बुद्धिहीन हैं। हो सकता है कि मैं कुछ बुद्धिहीन हूँ पर मेरी कोशिश हमेशा बहुत बुद्धिमान बनने की रहती है। जो कुछ भी है उसको समझना ही विवेक है।

प्रश्न : प्रेम क्या है?

कृष्णमूर्ति: आप तीन हफ्तों से मुझे सुनते आ रहे हैं। हफ्ते में पांच दिन, मैं हर सुबह आपसे बातचीत करता रहा हूँ, और अब आप मुझसे पूछते हैं: प्रेम क्या है? मैं प्रेम के विषय में आपसे कई तरीकों से बातचीत कर चुका हूँ--सत्य के, मन के, भयों के बारे में बोलता रहा हूँ। आप पूछते हैं--प्रेम क्या है? कितने दुख की बात है, नहीं है क्या? क्योंकि प्रश्न को पूछते समय आपको इसका भी ध्यान नहीं है कि आप कितने अधिक लापरवाह हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि प्रेम क्या है, बल्कि महत्त्व इस बात का है कि आप स्वयं अपनी दशा को, आप क्या हैं, इसे भी नहीं जानते। क्या आपको लगता है कि किसी अन्य व्यक्ति से पूछकर प्रेम को जाना जा सकता है? 'मैं यह जानना चाहता हूँ कि प्रेम क्या है', ऐसा कहनेवाला व्यक्ति यह प्रश्न इसलिए पूछता है ताकि वह प्रेम को पा सके, ऐसा व्यक्ति कभी प्रेम नहीं कर पाएगा। यदि आप जान लेते हैं कि आपमें प्रेम का अभाव है तो अनायास ही प्रेम से भर उठेंगे। परंतु इसे जानने से पहले आपको यह जानना होगा कि आप क्या हैं, और आप जो नहीं हैं वह बनने का प्रयत्न करना छोड़ना होगा।

इस सभी बातों पर ज़रूर सोचें। केवल अध्ययन करने में, किताबें पढ़ने में, खेलते रहने में अपना

## Chapter 15

playing games, but think about all these things. We are trying to arrange for some of the teachers to talk to you every day, to have an assembly at which all the teachers talk from time to time about all these matters. You may be bored with the teachers and with what they say. What they say may have some importance or no importance. But you have to listen to find out, have you not? If what they say is true or false or absurd or silly, you have to listen to find out, and to listen, you have to pay attention. So, do not accept anything they say. Find out.

To be critical is very important because it is the only way you will find out. You merely accept or listen with a bored air because you are tired; if you are bored, you can never find out. If you pay attention to everything that the teacher tells you; what everybody tells you including myself—not just accept, but understand, find out—then, that sharpens your mind and quickens your heart. Then when you have finished with school, when you go to college, you have a mind which can deal with the complexities of life.

Question: How can we shake off national and provincial feelings?

Krishnamurti: First understand if you have got them, how you have created them. It is no good saying, 'I must shake them off.' Why have you got them? Because your parents, society, your neighbours, your teachers, your newspapers, your books, have all set up nationalism, provincialism, for various complicated and subtle reasons—to control you; to shape

समय न बिताएं, बल्कि इन सारी बातों पर विचार करें। हम आपके लिए ऐसी व्यवस्था करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि प्रतिदिन कुछ शिक्षक आपसे बातचीत करें, एक ऐसी बैठक हो जिसमें समय-समय पर सभी शिक्षक आपसे विभिन्न बातों पर विचार-विमर्श करें। हो सकता है शिक्षकों से, और जो कुछ वे कहते हैं उससे आप ऊब जाते हों। वे जो कुछ कहते हैं वह शायद महत्वपूर्ण हो या न हो लेकिन यह जान पाने के लिए भी यह ज़रूरी है कि आप उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनें, ठीक है न? वे जो कहेंगे वह सत्य या असत्य हो सकता है, व्यर्थ या अनर्गल हो सकता है पर इसे जान सकने के लिए आपको वह सब ध्यान से सुनना होगा और उसे ठीक से सुन पाने के लिए आपको उस पर पूरा ध्यान देना होगा। इसलिए वे जो कहें उसे यूँ ही मत स्वीकार करें। स्वयं उसकी खोजबीन करें।

समीक्षात्मक दृष्टि रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी आप कुछ पता लगा सकते हैं। या तो आप सब कुछ ऐसे ही मान लेते हैं, या फिर इस तरह सुनते हैं मानो थककर ऊब रहे हों। ऊब में तो आप खोजबीन नहीं कर सकते। शिक्षक आपसे जो कुछ कहते हैं, या अन्य कोई भी व्यक्ति आप से जो कुछ कहते हैं—और इसमें मैं भी शामिल हूँ—यदि आप उस सब को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, केवल सुनते भर नहीं हैं बल्कि समझते भी हैं, स्वयं पता लगाते हैं तो इससे आपका मन तेज़ और सक्रिय हो जाता है और हृदय स्फूर्ति से भर जाता है। और तब जब आप स्कूल की शिक्षा पूर्ण कर कॉलेज में जाएंगे तो आपका मन इस योग्य होगा कि जीवन की जटिलताओं का मुकाबला कर सके।

प्रश्न : हम अपने अंदर से राष्ट्रवादी और प्रांतवादी भावनाओं को कैसे दूर कर सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : पहले तो यह मालूम करें कि क्या आपमें ऐसी भावनाएं मौजूद हैं, और आपने उन्हें किस प्रकार रच डाला है। 'मुझे भावनाओं को अपने भीतर से निकाल बाहर करना है' ऐसा कहना बेकार है। वे आपके भीतर कहां से आईं? बहुत तरह के जटिल और सूक्ष्म कारणों के चलते आपके माता-पिता, समाज, आपके पड़ोसी, आपके शिक्षकों, आपके अखबारों, आपकी किताबों आदि ने राष्ट्रवाद और प्रांतवाद के उन आग्रहों को पुष्ट किया है ताकि वे आपको अपने नियंत्रण में रख सकें, आपको

## Chapter 15

you; to make you do things they think you ought to do. A general will say nationalism is important because then he can use you; through nationalism, to fight, to kill. There are various reasons why you have these feelings of nationalism, of provincialism, and also, you like them. You like to say, 'I am a Hindu; I am a Brahmin, I belong to this little part of India.' And the political parties, the priests, the clever ones use you to get what they want.

If you understand this, then there will be no problem, it will drop away; then you will laugh at the whole thing. If you do not understand, it will be very difficult to put away this stupid nationalism and provincialism.

Question: Why is there danger?

Krishnamurti: Is there not danger when you go near the precipice? Is there not a danger of getting drowned when you do not know how to swim? Is there not danger when you meet a snake?

Danger means, fear of something, does it not? It is a natural thing to be aware of danger, that is a habit, protection, a natural physical resistance. Otherwise, if you have no sense of danger, you might kill yourself any moment when a car dashes by; if you are not aware of the danger that might destroy you; then you will be killed.

So, this kind of awareness of danger is a form of self-protection, a response which is natural, but what is abnormal is when we want to protect ourselves inwardly; then

अपने अनुरूप ढाल सकें, आपको वह सब करने के लिए बाध्य करें जो उनकी दृष्टि में आपके लिए जरूरी है। एक फौजी जनरल राष्ट्रवाद को आवश्यक बतलाएगा क्योंकि तब वह आपको इस्तेमाल कर सकता है, राष्ट्रवाद के माध्यम से वह आपको युद्ध करने, हत्याएं करने के काम में ला सकता है। आपके भीतर राष्ट्रवाद और प्रांतवाद आदि की भावनाएं पनपने के विभिन्न कारण होते हैं और आप स्वयं भी उन्हें पसंद करते हैं। 'मैं हिंदू हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं भारत के इस छोटे से हिस्से का निवासी हूँ' आदि बातें कहना आपको भी अच्छा लगता है। और राजनीतिक दल, पुरोहित वर्ग, तथा चालाक लोग अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आपको इस्तेमाल करते हैं।

यदि आप इसे समझ लेते हैं तो कोई समस्या ही नहीं रहती, आप इस सबसे आसानी से छूट जाते हैं, तब आप इस पूरे तमाशे पर हंसते हैं। और यदि आप इसे नहीं समझ पाते तो इस राष्ट्रवाद और प्रांतवाद की मूर्खता से बच पाना अत्यंत कठिन हो जाता है।

प्रश्न : खतरा क्यों होता है?

कृष्णमूर्ति : जब आप किसी गहरी खाई के किनारे से गुजरते हैं तो क्या वहां खतरा नहीं होता? यदि आपको तैरना न आता हो तो क्या पानी में डूबने का खतरा नहीं होता? जब किसी सर्प से आपका सामना होता है तो क्या आप खतरे में नहीं होते?

खतरे का अर्थ है किसी चीज़ का भय होना, है न? खतरे के प्रति सावधान होना स्वाभाविक बात है, वह सुरक्षा के लिए आदतन होने वाली क्रिया है, स्वाभाविक शारीरिक प्रतिरोध है। यदि आपको खतरे की आशंका न महसूस हो, तो पास से किसी कार के गुजरने पर आप खुद को उससे बचा नहीं पाएंगे और उसके नीचे आ जाने से आपकी मृत्यु हो जाएगी, यदि आपको खतरे का आभास न हो पाए तो आप मारे जाएंगे।

अतः खतरे के प्रति जागरूकता का यह रूप आत्म-रक्षा का एक तरीका, एक नैसर्गिक प्रतिक्रिया है, परंतु जब हम मानसिक रूप से अपनी सुरक्षा करना चाहते हैं तो वह बिलकुल असामान्य बात हो जाती है और सारी गड़बड़ियां, सारी व्यथाएं वहीं से



## Chapter 15

all the mischief, all the misery, जन्म लेती हैं।  
begins.

Question: Are you happy or not? प्रश्न : आप सुखी हैं या नहीं?

Krishnamurti: I never thought about कृष्णमूर्ति : मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं।  
it. I have never thought 'Am I 'मैं सुखी हूँ कि नहीं हूँ?' यह मैंने कभी नहीं सोचा।  
happy or not?'

Happiness is not something of सुख ऐसा कुछ नहीं है जिसके होने का पता आपको  
which you are conscious, you चल सके, आप अपने आप से यह नहीं पूछ सकते,  
cannot ask yourself, 'Am I happy?' 'क्या मैं सुखी हूँ?' जिस क्षण आप ऐसा प्रश्न पूछते  
The moment you ask that question, हैं उसी क्षण आप दुखी हो जाते हैं। सुख खोजने  
you are unhappy. Happiness is पर नहीं मिलता। यह तो तब आता है जब आप  
something that comes not because कोई ऐसा कार्य करते हैं जिसमें आपको सचमुच  
you are seeking it but because you रुचि है। आप कोई कार्य इसलिए करते हैं क्योंकि  
are doing something which really आपको उससे प्रेम है, और उसे करने में ही कुछ  
interests you. You are doing ऐसा घटित होता है जिसे सुख कहा जाता है, परंतु  
something because you love it; in यदि आपको इस बात का एहसास है कि आप सुखी  
the very doing of it, there is हैं तो समझ लीजिए यह लुप्त हो चुका है। जैसे ही  
something which is called आप 'मैं सुखी हूँ' कहते हैं क्या उसी क्षण सुख  
happiness, but if you are conscious विदा नहीं हो जाता?  
that you are happy, it is already  
gone. The moment you say, 'I am  
happy,' has not happiness already  
gone?

You understand what I am talking क्या आप समझ रहे हैं कि मैं किस बारे में बात  
about? Please ask your teachers कर रहा हूँ? कृपया अपने शिक्षकों से कहें कि वे  
to explain all these things, and if आपको ये सारी बातें समझाएं, और यदि वे इसे न  
they do not understand and do not समझते हों और आपको न समझाते हों तो आप  
explain it, you search it out. Do स्वयं इस बारे में खोजबीन करें। किसी भी बात को  
not accept anything. Do not be ऐसे ही न मान लें। बड़ों की घुड़कियों से, किसी के  
brow-beaten, do not be bullied धमकाने से डरिए नहीं। खोजें, जांच करें, अन्वेषण  
by the करें और कभी संतुष्ट होकर रुक न जाएं। तब  
older people. Find out, inquire, आप इसका पता लगा लेंगे कि प्रसन्न रहना क्या  
search, and never be satisfied होता है।  
Then, you will find out what it is  
to be happy.

January 22, 1954

२२ जनवरी, १९५४